Shodh Prabha: A Multidisciplinary Journal
ISSN: 3108-2726 (Online), Volume-2, Issue-4, (July - August) 2026

श्री रामचरितमानस, मूल्य शिक्षा और वर्तमान भारतीय समाज

डॉ० सतीश कुमार द्विवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री नरहेजी महाविद्यालय, नरही, रसरा, बलिया

शोध-सार

प्रस्तुत शोध लेख श्री रामचरितमानस में चित्रित आदर्शों एवं मूल्यों तथा वर्तमान समाज में व्याप्त आदर्शों एवं मूल्यों की गुणवत्ता के अध्ययन पर आधारित है। गोस्वामी तुलसीदास विरचित प्राचीनतम आदर्श सनातन महाकाव्य रामचरितमानस उत्कृष्ट सामाजिक मूल्यों-प्रेम, त्याग, विश्वास, कर्तव्य और न्याय का वह महाकोष है जो आदि काल से वर्तमान समय तक मानव समाज का मार्ग प्रशस्त और दीप्तिमान करता रहा है। रामचरितमानस में गोस्वामी जी ने मर्यादा शिल्पी श्रीराम, त्याग और निष्काम की प्रतिमूर्ति भरत, सुमित्रा नन्दन लक्ष्मण, निष्ठा भी जिनको देखकर संकुचाए, तेजस्वी शत्रुघ्न, माँ सीता, भक्त श्री हनुमान, देवी उर्मिला और मित्र सुग्रीव के उत्तम आदर्श चरित्रों का अत्यन्त रमणीय वर्णन किया है। रामचरितमानस एक आदर्श समाज, आदर्श मानव जीवन का मनोहारी जीवन्त प्रस्तुतीकरण है जिसके प्रतिबिम्ब को शोधार्थी द्वारा इस शोध लेख के माध्यम से वर्तमान आधुनिक समाज में देखने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है। साहित्य समीक्षा के अन्तर्गत पोद्दार, हनुमान प्रसादः रामचरितमानस, गीता प्रेस साथ ही विभिन्न जर्नल्स में प्रकाशित सम्बन्धित शोध पत्रों का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत शोध लेख में शोधकर्ता द्वारा शोध के गुणात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के चार उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं। । अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि रामचरितमानस में निहित नैतिक एवं सामाजिक मूल्य वर्तमान भारतीय समाज में मूल्य शिक्षा और सामाजिक समरसता की दृष्टि से प्रासंगिक हैं।

शब्द कुंजी - रामचरितमानस, मूल्य, शिक्षा, भारत, समाज।

प्रस्तावना

श्री रामचरितमानस केवल सनातन समाज ही नहीं, सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण का भाव अपने में सहेजे हुए है। यह मनुष्य का मनुष्य के प्रति तथा मनुष्य का समाज के प्रति कर्तव्यों का बोध कराने वाला महाग्रन्थ है। इसमें पिता-पुत्र सम्बन्ध और पिता के आज्ञापालन का अनुपम उदाहरण वर्तमान समाज के युवाओं के लिए एक दिव्य ज्योति की तरह है। अग्रज का अनुज से, अनुज का अग्रज से प्रेम का ऐसा उदाहरण शायद भविष्य में अवलोकनार्थ मिले। एक जगह **अयोध्या काण्ड** में 178वें दोहे के बाद आई दूसरी चौपाई में बड़ा ही रमणीय उल्लेख मिलता है जब अयोध्यावासी श्री भरत जी को अयोध्या के सिंहासन पर बैठने के लिए उनसे सप्रेम अनुरोध कर रहे होते हैं तब भरत जी ने कहा-

मोहि समान को पाप निवासु । जेहि लगि सीयराम बनवासू।।

रौंय राम कहू कानन दीन्हा। बिछुरत गमनु अमरपुर किन्हा।।

(अयोध्या काण्ड)

भावार्थ-मेरे समान पापों का पुंज कौन होगा जिसके कारण सीता जी और प्रिय श्री राम जी को वनवास हुआ। राजा ने श्री राम जी को वनवास दिया और उनके बिछुड़ते ही स्वयं स्वर्ग को गमन कर लिया। एक भाई के दूसरे भाई के प्रति

प्रेम की यह सर्वोच्च पराकाष्ठा प्राचीन भारतीय समाज के मूल्यवान आभूषणों में से एक है। इसी तरह अन्य सामाजिक रिश्तों का भी अतुलनीय उदाहरण श्री रामचरितमानस में देखने को मिलता है।

वर्तमान समाज में रिश्ते-नाते बहुत ही जटिल हो गए हैं। भावनात्मक लगाव में कमी आई है। स्वाभिमान की जगह अहंकार, त्याग की जगह स्वार्थ और प्रेम की जगह द्वेष ने ले लिया है। रिश्तों से उम्मीदें रिश्तों को तार-तार कर रही हैं। बच्चों में शिष्टता की कमी और उनका विद्रोही स्वभाव सम्पूर्ण वैश्विक समाज को सदाचार के निचले पायदान पर ला खड़ा कर रहे हैं। ऐसे में श्री रामचरितमानस रूपी सामाजिक आचरण सविता सम्पूर्ण वैश्विक समाज को नैतिकता के शिखर पर ले जाने का कार्य कर सकता है।

साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत शोध के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस को सामाजिक, नैतिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक दृष्टियों से विभिन्न विद्वानों ने विश्लेषित किया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में हनुमान प्रसाद पोद्दार द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड तथा सुन्दरकाण्ड का अध्ययन किया गया। इन काण्डों में वर्णित आदर्श चरित्रों, सामाजिक संबंधों, कर्तव्यबोध, समरसता, नैतिकता तथा जीवन-मूल्यों से संबंधित प्रसंग प्रस्तुत शोध के लिए आधार प्रदान करते हैं।

सुशील कुमार यादव (2018) ने 'रामचरितमानस के वैज्ञानिक आयाम और सामाजिक समरसता' विषय पर अध्ययन करते हुए रामचरितमानस को सामाजिक समरसता के संदर्भ में देखा है। निकुंज कुमार (2019) का शोध 'रामचरितमानस में जीवन कौशल' ग्रन्थ में निहित जीवनोपयोगी मूल्यों और व्यवहारगत शिक्षाओं की ओर संकेत करता है। प्रवेश वर्मा (2023) ने 'मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में रामचरितमानस का समीक्षात्मक अध्ययन' शीर्षक के अन्तर्गत रामचरितमानस में निहित मानवीय मूल्यों को अध्ययन का आधार बनाया है। इसी क्रम में कृष्णा (2023) का 'रामचरितमानस में स्त्री विमर्श' विषयक अध्ययन ग्रन्थ में स्त्री-संबंधी दृष्टिकोण को केन्द्र में रखता है।

उपर्युक्त अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि रामचरितमानस के सामाजिक, मानवीय, जीवन-कौशल तथा स्त्री-विमर्श संबंधी पक्षों पर पूर्व में कार्य किया गया है। तथापि प्रस्तुत शोध में रामचरितमानस में निहित मूल्य-शिक्षा को वर्तमान भारतीय समाज के संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। इसी आधार पर 'श्री रामचरितमानस, मूल्य शिक्षा और वर्तमान भारतीय समाज' विषय का चयन किया गया है।

शोध के उद्देश्य- प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

1- श्री रामचरितमानस में निहित नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2- रामचरितमानस में सामाजिक समरसता और मूल्य शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना।
3- वर्तमान भारतीय समाज में गिरते मूल्यों के संदर्भ में रामचरितमानस की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
4- श्रीराम के चरित्र में निहित नैतिक आदर्शों के माध्यम से वर्तमान भारतीय समाज के लिए मूल्यपरक मार्गदर्शन का विवेचन करना।

शोध विधि- प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पर आधारित है तथा इसमें वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक सामग्री के रूप में रामचरितमानस के चयनित प्रसंगों तथा द्वितीयक सामग्री के रूप में उपलब्ध संबंधित ग्रन्थों और शोध-पत्रों का अध्ययन किया गया है।

रामचरितमानस - श्री रामचरितमानस की रचना गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा मध्यकाल में की गई थी। इस महाकाव्य की रचना का आरम्भ ई०स० 1574, विक्रम संवत 1631, तिथि- राम नवमी, दिन-मंगलवार को हुआ था। इस पावन सामाजिक संविधान, आदर्श महाकाव्य को लिखने में 2 वर्ष 7 माह 26 दिन का समय लगा। यह महाकाव्य ई०स० 1576, विक्रम संवत 1633, शुक्ल पक्ष, राम विवाह के दिन पूर्ण हुआ। इस महाकाव्य के नायक भगवान श्री राम हैं। इस ग्रन्थ में भगवान श्री राम और उनके आदर्श चरित्र की चर्चा है। रामचरितमानस अवधी भाषा में लिखा गया है। इस महाकाव्य में राम चरित्र को दोहों, चौपाइयों, सोरठों और छन्दों के माध्यम से बड़ी ही रमणीय रीति से चित्रित किया गया है। रामचरितमानस सात काण्डों में विभक्त है। विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों में इसे 46 वाँ स्थान प्राप्त है। गोस्वामी जी ने लोदी वंश के अन्तिम शासक इब्राहिम लोदी और मुगल शासकों बाबर, हुमायूँ, अकबर और जहाँगीर के शासन काल को देखा था। गोस्वामी जी का जन्म 1511 ई० में हुआ था और मृत्यु लगभग 112 वर्ष बाद 1623 ई० में हुई थी। रामचरितमानस संस्कृत के प्रथम महाकाव्य 'रामायण' का अवधी भाषा में अनुवाद है। श्री रामचरितमानस रूपी कण्ठहार में अत्यन्त मूल्यवान मणियाँ हैं- श्री राम सेवक बुद्धि के सागर श्री हनुमान, श्री राम अनुज समर्पण को भी उसकी पहचान देने वाले प्यारे लखन। स्वाभिमान, सहनशीलता और पवित्रता की मूरत माता सीता, पितृभक्त, कर्तव्यनिष्ठ, प्रजावत्सल सद्गुण शिल्पी स्वयं भगवान श्रीराम, त्याग और वैराग्य के परमोत्कर्ष भरत जी। संस्कृत के प्रथम महाकाव्य 'रामायण' की रचना प्रथम काव्य रचयिता आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने की थी। महर्षि वाल्मीकि रचित 'रामायण' में 24000 श्लोक हैं, जिसमें श्री राम और उनके आदर्श चरित्र की चर्चा है। वनवास काल में श्री राम वाल्मीकि जी के आश्रम में भी आए थे। लेकिन स्वयं भगवान वाल्मीकि भी आदि राम से पूरी तरह अनभिज्ञ थे।

एक जगह मध्यकाल के संत एवं कवि कबीरदास जी कहते हैं -

राम राम सब जगत बखाने,

आदि राम कोई बिरला जाने।

ऐसे में यह जिज्ञासा होती है कि क्या एक से अधिक राम हुए हैं? क्या कई कल्प, कई चतुर्युग बीत चुके हैं? क्या त्रेतायुग कई बार आया? हर एक त्रेतायुग में एक राम हुए हैं। प्राचीन ग्रन्थों एवं सन्तों के अध्ययन एवं चिन्तन से तो यही ज्ञात होता है कि वास्तव में ऐसा ही है। आदि राम को कोई नहीं जानता। रामायण- राम+अयण अर्थात राम की जीवन यात्रा का रचनाकाल कुछ विद्वान 600 ई०पू० मानते हैं। लेकिन गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य श्री निश्चलानन्द सरस्वती एवं संतों के अनुसार श्री राम चन्द्र जी का काल लगभग पौने 2 करोड़ वर्ष पूर्व का है।

मूल्य- मूल्य अर्थात किसी चीज की कीमत या महत्त्व, मूल्य के दो स्वरूप हैं-मौद्रिक एवं अमौद्रिक मूल्य। मौद्रिक मूल्य अर्थात पैसा, रुपया, धन आदि। अमौद्रिक मूल्य अर्थात 'आदर्श' या 'उत्तम चरित्र'। मूल्य चरित्र निर्माण का आधार होता है। यह जनचेतना को देवत्व प्रदान करता है। मूल्य सार्वभौमिक समाज में शान्ति व्यवस्था और न्याय का महत्त्वपूर्ण कारक है। श्री रामचरितमानस के अनुसार मूल्य- सत्य, धर्म, न्याय, त्याग, तपस्या, बलिदान, ममता, करुणा, प्रेम, मर्यादा और कर्तव्य आदि सद्गुणों का पुंज है। स्वयं पुरुषोत्तम श्रीराम राजधर्म, पुत्रधर्म, पत्नीधर्म, भ्रातृधर्म, मित्रधर्म आदि के साक्षात् दर्पण थे। एक जगह श्री रामचरितमानस के **उत्तर काण्ड** में उल्लेख मिलता है -

परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

(उत्तर काण्ड दोहा, संख्या 41 का प्रारम्भ)

भावार्थ-परहित से बड़ा कोई धर्म नहीं है और परपीड़ा से बड़ा कोई अधर्म नहीं है।

शिक्षा-शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष' धातु का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'अ' प्रत्यय लगने से शिक्षा शब्द बनता है जिसका अर्थ है सीखने और सिखाने की प्रक्रिया। श्री रामचरितमानस में शिक्षा के व्यापक अर्थ का उल्लेख है। इसमें केवल परीक्षा परिणाम का वर्णन नहीं है। इसमें जीवन परिणाम का भी उल्लेख किया गया है। श्री रामचरितमानस में राज कर्तव्य की शिक्षा, परिवार कर्तव्य की शिक्षा, समाज कर्तव्य की शिक्षा, न्याय शिक्षा, धर्म शिक्षा, ज्ञान शिक्षा, वैराग्य शिक्षा, भक्ति शिक्षा, कौशल शिक्षा, त्याग शिक्षा, समर्पण शिक्षा, संयम शिक्षा, युद्ध कौशल शिक्षा, अभियंत्रण शिक्षा आदि के साथ शिक्षा के व्यापक अर्थ का वर्णन मिलता है जो वर्तमान वैश्विक समाज के लिए अनन्त सदाचार रूपी जल से भरे हुए महासागर की तरह है।

भारत- भारत शब्द दो शब्दों भा + रत से मिलकर बना है, 'भा' का अर्थ **ज्ञान** और 'रत' का अर्थ **लगा हुआ** है। इस तरह भारत का अर्थ है **ज्ञान की खोज में लगा हुआ**। भौगोलिक दृष्टि से 7 वाँ बड़ा एवं जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा देश भारत 1200 ई०पू० में संस्कृत भाषा का केन्द्र हुआ करता था। भारत वेदों (ज्ञान) का देश है। रामायण में भारत को जम्बूदीप (जामुन के वृक्षों की भूमि), आर्यावर्त (श्रेष्ठ लोगों की भूमि), साथ ही उन्नत सभ्यता, संस्कृति, अध्यात्म, न्याय, त्याग, प्रेम और भाईचारे की भूमि कहा गया है। रामचरितमानस में भी भारत को उन्नत संस्कृति वाला क्षेत्र बताया गया है। ऐसा वर्णन मिलता है कि प्राचीन भारत की सीमाएँ पूर्व में वर्मा से लेकर अफगानिस्तान तक और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में श्रीलंका तक विस्तारित थीं। भारत भूमि ज्ञान-विज्ञान और सदाचारों की भूमि है जहाँ से सम्पूर्ण विश्व में इसका प्रसार हुआ, जिसमें रामचरितमानस और रामायण काल की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

समाज-समाज को समुदाय भी कहा जाता है। यह संस्कृत के 'सम्' उपसर्ग और 'अज' धातु से मिलकर बना है। जहाँ 'सम' का अर्थ **'एक साथ'** और 'अज' का अर्थ **'रहना'** है। इस तरह समाज का अर्थ एक साथ रहने वाला समूह है, जिसमें लोग मिल-जुल कर रहते हैं और एक-दूसरे के साथ विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाते हैं। श्री राम युगीन समाज अत्यन्त उन्नत समाज था। मानस में तत्कालीन सामाजिक समरसता का कई जगह उल्लेख मिलता है। एक जगह बाट जोहती माता शबरी और श्री राम जी का मनोहारी वर्णन देखने को मिलता है-

केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी।।

(अरण्यकाण्ड दोहा संख्या 34 के बाद प्रथम चौपाई से)

भावार्थ-शबरी माता बोलती हैं, हे प्रभु! मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ? मैं नीच जाति की और अत्यन्त मूढ़ बुद्धि की स्त्री हूँ। इसके बाद दूसरी चौपाई में श्री रघुनाथ जी ने बड़े ही आदरपूर्वक माता शबरी से बोला।

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानऊ एक भगति कर नाता।।

(अरण्यकाण्ड दोहा संख्या 34 के बाद द्वितीय चौपाई से)

भावार्थ- यहाँ पर प्रभु श्री राम प्रेम भरी नाराजगी व्यक्त करते हुए माता शबरी के अन्तर्मन की सुन्दरता को निहारते हुए कहते हैं, हे भामिनी! (सुन्दर स्त्री) सुनो, मैं तो केवल प्रेम एवं समर्पण का सम्बन्ध ही जानता हूँ।

यह तत्कालीन समाज की गुणात्मक समृद्धि की उच्चतम सीमा को प्रदर्शित करता है। श्री रामचरितमानस के नायक श्री राम जिन्हें भगवान श्री हरि विष्णु का 7 वाँ अवतार माना जाता है जो आदि काल से सार्वभौमिक मानव समाज के

रोम-रोम में समाए हैं, उन भगवान श्री राम से हमारे जीवन का प्रत्येक अंश आच्छादित है- अगर कोई मिलता है तो हम कहते हैं- राम-राम, स्वयं को कष्ट होता है तो मुँह से निकलता है-हे राम, घृणा एवं किसी के कष्ट को देखकर कहते हैं: राम-राम-राम, जीवन में शक्ति के अनुभव के लिए- जय श्री राम, कोई सुखी एवं प्रसन्न है तो कहते हैं - ये तो रामराज्य भोग रहे हैं। विश्राम (निद्रा) की अवस्था में कहते हैं- आऽऽऽ राम। आराम (राम आ गए) अर्थात जीवात्मा के परमात्मा से मिलन पर जो आनन्द की प्राप्ति होती है, उसी की संकल्पना जैसा लगता है। यहाँ तक कि जीवन की अन्तिम यात्रा के समय बोलते हैं - राम नाम सत्य है। भगवान श्री राम स्नेह, समर्पण, न्याय, निष्ठा, धैर्य, धर्म, संयम, साहस, कम संसाधन में कार्यकुशलता एवं बेहतर प्रबन्धन का सुन्दर उदाहरण वर्तमान समाज के युवाओं के लिए प्रस्तुत करते हैं। इस तरह राम राष्ट्रीय सम्मान हैं। श्री रामचरितमानस की एक चौपाई श्री राम कालीन सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का ज्ञान कराती है।

जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहाँ विपति निदाना।।

(सुन्दरकाण्ड)

भावार्थ-जहाँ लोगों में अच्छी बुद्धि होती है, प्रेम और सहयोग होता है वहाँ स्वतः ही सुख, समृद्धि, शान्ति का वास होता है। इसके विपरीत जहाँ द्वेष, मतभेद और नकारात्मकता होती है वहाँ पर विपत्तियों, कलह और दुःख का वास होता है।

श्री राम कालीन समाज में स्त्रियों को आदर्श स्थान प्राप्त था। -विवाह के निर्णय में स्वतंत्रता थी, धार्मिक कार्यों में पति की सहभागिनी थीं, वानरराज बाली की पत्नी तारा राजनीति का ज्ञान रखती थी। इस तरह तत्कालीन स्त्रियों की राजनीतिक सहभागिता का प्रमाण मिलता है। वे शिक्षा प्राप्त करती थीं, धन पर उनका अधिकार होता था। स्त्रियों के सम्मान और सुरक्षा में श्रीराम जी द्वारा कहे गए एक कथन से यह और भी स्पष्ट हो जाता है-

अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी।।

इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई।।

(किष्किंधा काण्ड)

भावार्थ- यहाँ पर बाली को उसका दोष बताते हुए प्रभु श्री राम जी कहते हैं कि छोटे भाई की पत्नी, बहन, पुत्र की पत्नी और कन्या ये चारों ही पूजनीय हैं, एक समान हैं। इन्हें जो बुरी दृष्टि से देखता है, उसे मारने से कुछ भी पाप नहीं होता है।

रामचरितमानस में स्त्री विषयक बहुत सारे प्रसंग मिलते हैं। आदर्श रूप में माता अनुसूया और सीता का उल्लेख मिलता है तो वहीं अनादर्श रूप में कामी शूर्पनखा और मद में चूर ताड़का का विस्तार से वर्णन मिलता है। रामचरितमानस में **अयोध्याकाण्ड** में एक जगह स्त्री-पुरुष सम्बन्ध को लेकर सुन्दर वर्णन मिलता है जब सीता जी, श्री राम जी से वनवास को जाते समय कहती हैं-

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरूष बिनु नारी।।

(अयोध्याकाण्ड)

यह चौपाई स्त्री-पुरुष के बीच के अटूट सम्बन्ध और एक-दूसरे के बिना उनकी अपूर्णता को दर्शाती है।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि श्री रामचरितमानस में श्री राम कालीन जिस आदर्श समाज का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, उसमें भाई का भाई के प्रति, पुत्र का पिता के प्रति, मित्र का मित्र के प्रति, पत्नी का पति के प्रति, पति का पत्नी के प्रति, एक राजा का प्रजा के प्रति, यहाँ तक कि अपने शत्रु के प्रति श्रीराम का उत्तम व्यवहार नैतिकता की उस उच्चतम सीमा को स्पर्श करता है जो इतने दीर्घ काल में भी सम्भव नहीं हो पाई। बार-बार श्री रघुनाथ द्वारा शान्ति का प्रयास किया गया। शत्रु रावण की मृत्यु के समय अपने छोटे भाई लक्ष्मण को नीति-ज्ञान के लिए रावण के पास भेजा गया। आज स्वार्थ के आगोश में बैठे हुए वर्तमान समाज के लोग स्वतः को छोटी-से-छोटी इकाई में बाँटते चले जा रहे हैं। श्री रघुनाथ के गुणों से सार्वभौमिक समाज को सीख लेने की आवश्यकता है। श्रीराम के चरित्र के अनुसरण से ही वर्तमान मानव समाज मनुष्यत्व से देवत्व की प्राप्ति कर सार्वभौमिक समाज का कल्याण और उत्थान कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पोद्दार हनुमान प्रसादः रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड) गीता प्रेस।
2. पोद्दार हनुमान प्रसादः रामचरितमानस (अरण्यकाण्ड) गीता प्रेस।
3. पोद्दार हनुमान प्रसादः रामचरितमानस (किष्किंधाकाण्ड) गीता प्रेस।
4. पोद्दार हनुमान प्रसादः रामचरितमानस (सुन्दरकाण्ड) गीता प्रेस।
5. शुक्ला सुधारानीः गोस्वामी तुलसीदास का सामाजिक आदर्श।
6. दास जयरामः मानस रहस्य गीता प्रेस।